B.A.II
सामाजिक नियंत्रण के प्रकार

सामाजिक नियंत्रण की परिभाषा से स्पष्ट है कि, व्यक्ति की पाशविक प्रवृतियों पर अंकुश लगाकर सामाजीकरण एवं मानवीकरण करके समाज को व्यवस्थित एवं संगठित रखना ही सामाजिक नियंत्रण है। किन्तु प्रत्येक व्यक्ति अपने विचारों, आदतों एवं स्वभाव के कारण प्रत्येक दूसरे व्यक्ति से भिन्न होता है। अत: इसी विभिन्नता के चलते सामाजिक नियंत्रण के स्वरूप में भी विभिन्नता आती जाती है। कुछ व्यक्तियों को प्रत्यक्ष तथा कुछ को परोक्ष रूप से नियंत्रित करने की आवश्यकता होती है। इस आधार पर प्रत्येक समाज तथा व्यक्ति की नियंत्रण की प्रकृति भी भिन्न होती है। विभिन्न समाजशास्त्रियों ने सामाजिक नियंत्रण के स्वरूप को अनेकों प्रकार से वर्गीकृत किया है।

कार्ल मैनहीम ने सामाजिक नियंत्रण के दो प्रकार बताये है।

प्रत्यक्ष सामाजिक नियंत्रण।

अप्रत्यक्ष सामाजिक नियंत्रण।

प्रत्यक्ष सामाजिक नियंत्रण

प्रत्यक्ष सामाजिक नियंत्रण प्राय: प्राथमिक समूहो में पाया जाता है। जैसे परिवार, पड़ोस तथा खेल समूह। यह नियंत्रण व्यक्ति पर उन व्यक्तियों द्वारा किये गये व्यवहार तथा प्रक्रियाओं का प्रभाव है जो उसके सबसे करीबी हो। क्योंकि व्यक्ति पर समीप रहने वाले व्यक्ति के व्यवहार का सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है। यह नियंत्रण्स प्रशंसा, निन्दा, आलोचना, सुझाव, पुरूस्कार, आग्रह तथा सामाजिक बहिष्कार आदि के द्वारा लगाया जाता है तथा प्रत्यक्ष रूप से लगाया गया सामाजिक नियंत्रण का प्रभाव स्थायी होता है तथा व्यक्ति इसको स्वीकार भी करता है।

अप्रत्यक्ष सामाजिक नियंत्रण

अप्रत्यक्ष या परोक्ष सामाजिक नियंत्रण व्यक्ति पर द्वितियक समूहो द्वारा लगाये गये नियंत्रण से है। विभिन्न समूहो, संस्थाओं, जनमत, कानूनों तथा प्रथाओं द्वारा व्यक्ति के व्यवहार को नियंत्रित कर एक विशेष प्रकार का व्यवहार करने को बाध्य किया जाता है। व्यक्ति इस नियंत्रित व्यवहार को धीरे-धीरे अपनी आदतों में शामिल कर लेता है यही अप्रत्यक्ष सामाजिक नियंत्रण है। समाज एवं समूह को व्यवस्थित एवं संगठित रखने के लिए अप्रत्यक्ष सामाजिक नियंत्रण का विशेष महत्व है तथा यह समूह के कल्याण में अपनी विशेष भूमिका का निर्वहन करते है।

चाल्र्स कूले ने सामाजिक धटनाओं के आधार पर सामाजिक नियंत्रण के प्रकारों को स्पष्ट किया है। कूले के अनुसार सामाजिक धटनायें दो प्रकार से समाज को नियंत्रित करती है।

चेतन नियत्रण-

मनुष्य अपने जीवन में अपने समूह के लिए कई कार्य तथा व्यवहार जागरूक अवस्था में सोच समझ कर करता है। यह चेतन अवस्था कहलाती है। जागरूक अवस्था में किया गया कोई भी कार्य चेतन नियंत्रण कहलाता है।

अचेतन नियंत्रण-

प्रत्येक समाज या समूह की अपनी संस्कृति, प्रथायें, रीति रिवाज, लोकाचार, परम्परायें तथा संस्कारों से निरन्तर प्रभावित होकर उनके अनुरूप ही समाज व समूह के प्रति व्यवहार करता है, इन प्रथाओं रीति रिवाजों या धार्मिक संस्कारों के प्रति व्यक्ति अचेतन रूप से जुड़ा रहता है और जीवन पर्यन्त वह उसकी अवहेलना नहीं कर पाता जो समाज व समूह को नियंत्रित करने में अपनी प्रमुख भूमिका निभाते है। यह अचेतन नियंत्रण कहलाता है।

किम्बाल यंग ने सामाजिक नियंत्रण को सकारात्मक नियंत्रण एवं नकारात्मक नियंत्रण दो भागों में विभाजित किया है।

सकारात्मक नियंत्रण-

सकारात्मक नियंत्रण में पुरूस्कारों के माध्यम से व्यक्ति के व्यवहार को नियंत्रित किया जाता है। प्रोत्साहन या पुरूस्कार व्यक्ति की कार्यक्षमता को तो बढाता ही है साथ ही अच्छे कार्यो के लिए प्रेरित भी करता है। प्रथाओं और परम्पराओं का पालन करने की कोशिश करता है जो समाज उसे एक सम्मानजनक स्थिति प्रदान करता है। उदाहरण के लिए स्कूल कालेजों में विद्यार्थियों को तथा समाज में उत्कृष्ट कार्य करने के व्यक्ति को पुरूस्कार द्वारा सम्मानित करना।

नकारात्मक नियंत्रण-

जहां एक ओर समाज में प्रोत्साहन या पुरूस्कारों द्वारा व्यक्ति के व्यवहार को नियंत्रित किया जाता है वही दूसरी ओर दण्ड के माध्यम से भी व्यक्ति के व्यवहार को नियंत्रित किया जाता है। समाज द्वारा स्वीकृत नियमों, आदर्शो, मूल्यों तथा प्रथाओं का उल्लधंन करने पर व्यक्ति को अपराध के स्वरूप के आधार पर सामान्य से मृत्यु दण्ड तक दिया जाता है। यही कारण है कि व्यक्ति आदर्शो के विपरीत आचरण नही करते या करने से डरतें है। इस प्रकार के नियंत्रण को नकारात्मक नियंत्रण कहते है। जैसे कि जाति के नियमों के विरूद्व आचरण करने वाले व्यक्ति को जाति से बहिष्कृत कर दिया जाता है।

गुरविच और मूरे ने सामाजिक नियंत्रण को संगठित, असंगठित, सहज नियंत्रण तीन भागों में विभाजित किया है।

संगठित नियंत्रण-

इस प्रकार के निंयंत्रण में लिखित नियमों के द्वारा व्यक्तियों के व्यवहारों को नियंत्रित करकिया जाता है। जैसे- राज्य के कानून इसके उदाहरण है। असंगठित नियंत्रण-

विभिन्न प्रकार के संस्कारों, प्रथाओं, लोकरीतियां तथा जनरीतियों द्वारा स्थापित नियंत्रण असंगठित नियंत्रण कहलाता है।

सहज नियंत्रण-

प्रत्येक व्यक्ति की अपनी आवश्यकतायें, नियम, मूल्य, विचार एवं आदर्श होते है अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए समय पर निर्भर रहना पड़ता है और इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए व्यक्ति स्वीकृत नियमों के अन्दर

रहकर ही करता है। इस प्रकार का नियंत्रण सहज सामाजिक नियंत्रण कहलाता है। जैसे- धार्मिक रीति रिवाजों का पालन सहज सामाजिक नियंत्रण का उदाहरण है।

औपचारिक नियंत्रण-

औपचारिक नियंत्रण के अन्तर्गत समाज में स्थापित एक ऐसी व्यवस्था जिसकी स्थापना राज्य तथा समाज मे व्याप्त औपचारिक संगठनों द्वारा बनाये गये स्वीकृत नियमों के आधार पर समूह के व्यक्तियों के व्यवहार पर नियंत्रण रखना होता है। इस प्रकार के नियमों का उल्लधंन करने पर दण्ड व्यवस्था का भी प्राविधान रखा जाता है। जैसे - कानून, न्यायपालिका, पुलिस, प्रचार प्रसार संगठन आदि।

अनौपचारिक नियंत्रण-

अनौपचारिक नियंत्रण में किसी प्रकार के लिखित कानूनों की आवश्यकता नही होती बल्कि समाज में व्याप्त स्वीकृत नियम, आर्दश,मूल्य, जनरीतियां, प्रथायें, लोकाचार तथा नैतिक नियमों के आधार पर नियंत्रण रखा जाता है। ।

डॉ0 मनीषा भूषण
असिस्टेन्ट प्रोफेसर–समाजशास्त्र